2.
रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन

(I)	पठित प्राकृत सूक्तियों अथवा सुभाषितों का 50 से 60 शब्दों में प्राकृत में विशदीकरण	10
(II)	पाँच हिन्दी अथवा अंग्रेजी वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद	10
(III)	पाँच प्राकृत के वाक्यों का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद	10

(I)

पठित प्राकृत सूक्तियों अथवा सुभाषितों का 50 से 60 शब्दों में प्राकृत में विशदीकरण

(1) पाइयकव्वम्मि रसो जो जायइ, तह य छेयभणिएहिं। (वज्जालग्गं–21)

रसिक लोगों के द्वारा कहा गया है कि प्राकृत काव्यों में जो रस है (वैसा अन्यत्र किसी भी काव्य में नहीं रहता)

(2) अमयं पाइयकव्वं पढिउं सोउं च जे न जाणंति। (वज्जालग्गं–2)

पढ़ने के लिए और सुनने के लिए जो प्राकृत काव्य है, वह अमृत के समान है। ऐसा जो नहीं जानते (वे लज्जा को क्यों नहीं प्राप्त होते।)

(3) दुज्जणसंगे पत्ते सुयणो वि सुहं न पावेइ। (वज्जालग्गं–62)

दुर्जन व्यक्ति का संसर्ग सज्जनों को भी सुख नहीं देता।

(4) अत्थउ होइ अणत्थउ कामो वि गलंत–पेम्प–विरसओ (कुवलयमालाकहा–पैरा–4,गाथा–4)

अर्थ अनर्थ को करने वाला होता है और काम पुरुषार्थ असफल प्रेम तथा विरसता पैदा करने वाला होता है।

(5) चारित्तं खलु धम्मो (पवयणसारो–1/7)

चारित्र ही धर्म है।

(6) आदाणाणपमाणं (पवयणसारो–1/23)

आत्मा ज्ञान प्रमाण है।

(7) चंचलं सुरचाउ व्व विज्जुलेहेव चंचलं (कुम्मापुत्तचायिं–59)

(जीवन) इन्द्रधनुष के समान चंचल एवं बिजली की चमक के समान चंचल (क्षणिक) है।

(8) दव्वेण विणा ण गुणा गुणेहिं दव्वं विणा ण संभवदि। (पंचास्तिकाय–13)

द्रव्य के बिना गुण तथा गुण के बिना दंव्य नहीं पाया जाता।

(9) सज्जण–संगेण वि दुज्जणस्स ण हु कलुसिमा समोसरइ। (लीलावईकहा)

सज्जन की संगति से निश्चय ही दुर्जन की कालिमा (दुष्टता) दूर नहीं होती, क्योंकि अंधकार के बिना चन्द्रमण्डल के बीच रहने वाला मृग भी काला ही रहता है।

नोट :– छात्र–छात्राओं को इसी तरह की और भी सूक्तियों एवं सुभाषितों का संग्रह प्राकृत काव्य साहित्य से करना चाहिए।

(II)

पाँच हिन्दी अथवा अंग्रेजी वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद

(1) मैं भोजन करके विश्वविद्यालय जाता हूँ। अहं भुंजिऊण विस्सविज्जालयं गच्छामि।

(2) राम ने रावण को मारा था

(3) पेड़ से पत्ता गिरता है।

(4) हम सबने मिलकर पुष्प चुनें हैं।

(5) तुम्हें प्रतिदिन पढ़ाई करना चाहिए।

(6) कल रविवार को अवकाश रहेगा।

(7) वे सभी पूजा करने के लिए मंदिर गईं थीं।

(8) मैंने आज पुस्तक पढ़कर ज्ञान प्राप्त किया था।

(9) वे सभी इस समय पूजा अर्चना करती हैं।

(10) राम का नाम प्रातःकाल में जपो।

(11) गुरू का नाम स्मरण करना चाहिए।

(12) वे सभी आज से ही विद्यालय में पढेंगीं।

(13) श्रेष्ठ विद्यालय में प्रवेश लेकर पढ़ाई करना चाहिए।

(14) अध्यापक के द्वारा प्रतिदिन शिक्षा दी जायेगी।

(15) घर में वे सभी कल नृत्य करेंगीं।

नोट :– छात्र–छात्राओं को इसी तरह के और भी वाक्य बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

(III)

पाँच प्राकृत के वाक्यों का हिन्दी अथवा अंग्रेजी में अनुवाद

वर्तमान काल

(1)	अहं नमामि।	मैं नमस्कार करता हूँ।
(2)	अहं कहामि।	मैं कहता हूँ।
(3)	अम्हे नमामो।	हम सब नमस्कार करते हैं।
(4)	अम्हे कहामो।	हम सब कहते हैं।
(5)	तुमं नमसि।	तुम नमस्कार करते हो।
(6)	तुमं कहसि।	तुम कहते हो।
(7)	तुम्हे नमित्था।	तुम सब नमस्कार करते हो।
(8)	तुम्हे कहित्था।	तुम सब कहते हो।
(9)	सो/सा नमसि।	वह नमस्कार करता/करती है।
(10)	सो /सा कहसि।	वह कहता/कहती है।
(11)	ते/ताओ नमित्था।	वे सब नमस्कार करते/करती हैं।
(12)	ते/ताओ कहित्था।	वे सब कहते/कहती हैं।

भूतकाल

(1)	अहं नमीअ।	मैंने नमस्कार किया था।
(2)	अम्हे नमीअ।	हम सबने नमस्कार किया थां।
(3)	तुमं नमीअ।	तुमने नमस्कार किया था।
(3)	तुम्हे नमीअ।	तुम सबने नमस्कार किया थो।
(5)	सो/सा नमीअ।	उसने नमस्कार किया था।
(6)	ते/ताओ नमीअ।	उन सबने नमस्कार किया था।

नोट :– भूतकाल का प्रयोग करने के लिए कर्त्ता के साथ प्रयुक्त क्रिया में 'ईअ' प्रत्यय लगाकर रूप बनाये जा सकते हैं।

भविष्यत्काल

(1)	अहं नमिहिमि।	मैं नमस्कार करूँगा।
(2)	अम्हे नमिहामो।	हम सब नमस्कार करेंगे।
(3)	तुमं नमिहिसि।	तुम नमस्कार करोगे।
(3)	तुम्हे नमिहित्था।	तुम सब नमस्कार करोगे।
(5)	सो/सा नमिहिइ।	वह नमस्कार करेगा।
(6)	त/ताओ नमिहिंति ।	वे सब नमस्कार करेंगे।

नोट :–(1) भविष्यत्काल का प्रयोग करने के लिए कर्त्ता के साथ प्रयुक्त अकारान्त क्रियाओं में 'हि' प्रत्यय के स्थान पर 'स्स' प्रत्यय भी लगाकर रूप बनाये जा सकते हैं।

विधि एवं आज्ञा :–

(1)	अहं नमीअ।	मैंने नमस्कार किया था।
(2)	अम्हे नमीअ।	हम सबने नमस्कार किया थां।
(3)	तुमं नमीअ।	तुमने नमस्कार किया था।
(3)	तुम्हे नमीअ।	तुम सबने नमस्कार किया थो।
(5)	सो/सा नमीअ।	उसने नमस्कार किया था।
(6)	ते/ताओ नमीअ।	उन सबने नमस्कार किया था।

नोट :–(1) भूतकाल का प्रयोग करने के लिए कर्त्ता के साथ प्रयुक्त क्रिया में 'ईअ' प्रत्यय लगाकर रूप बनाये जा सकते हैं।

(2) अन्य क्रियाओं का प्रयोग करके इसी तरह और भी रूप बनाये जा सकते हैं।